IJAER/December-January 2017/Volume-5/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

भारत में महिलाओं मे आए परिवर्तन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ.हरिचरण मीना
व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सवाईमाधोपुर

सारांश

भारत मे महिलाओ की भूमिका में जबरदस्त बदलाव आये है और आज यह हमारे समाज में अपना सबसे बड़ा प्रभाव डाल रही है। भारत मे कई साल पहले समाज में महिलाओं के योगदान को पुरुषों द्वारा सीमित और नियंत्रित किया गया था। कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाएं प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। महिलाओं की भूमिका तेजी से बदली है और राजनीति, व्यावसायिक प्रशिक्षण, नौकरियां, चिकित्सा, व्यवसाय और कानून जैसे क्षेत्रों में भाग लिया है। पहले वे किसी राजनीतिक मामले का हिस्सा नहीं थी, लेकिन वे कई पहलुओं में आगे बढ़ी हैं। भारत में महिलाओं को जीवन भर बहुत सारे सामाजिक मुद्दों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो उनके जीवन की शुरुआत से ही उनके लिए बड़ा संघर्ष है। कन्या भ्रूण हत्या भारतीय समाज में मां के गर्भ में कन्या को मारने की एक कुप्रथा है। भारत में महिलाओं को उनके माता–पिता और पतियों के लिए बोझ के रूप में माना जाता है क्योंकि उन्हें लगता है कि महिलाएं यहां केवल थोड़ी सी कमाई किए बिना पैसे का उपभोग करने के लिए हैं। महिलाओं के लिए एक और आम समस्या यौन भेदभाव है जिसका वे अपने जन्म से सामना करती हैं और अपनी मृत्यु तक जारी रहती हैं। निरक्षरता, उचित शिक्षा की कमी, घरेलू कार्यों के लिए जिम्मेदार, बलात्कार, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न आदि भारत में महिलाओं के लिए कुछ बड़े मुद्दे हैं।

मुख्य शब्द: *महिला, बदलाव,* कुप्रथा, *समाजशास्त्रीय*

आलेखः–

महिलाओं के बिना पुरुषों के लिए कुछ भी संभव नहीं है। नारी समाज की मूल इकाई है। वह एक परिवार बनाती है, परिवार एक घर बनाता है, घर एक समाज बनाता है और अंततः समाज एक देश बनाता है। कोई भी देश तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक उसकी महिलाएं विकास कार्यों के लिए पहल नहीं करतीं। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है कि जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा, तब तक दुनिया के कल्याण के बारे में सोचना असंभव है। भारत में महिलाओं की स्थिति में पिछले वर्षों में कई बदलाव हुए हैं। महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामान्य स्थिति– आज भारत में प्राचीन और मध्ययुगीन काल की तुलना में बहुत अधिक है। हालांकि कानून की नजर में महिलाओं की स्थिति को समान किया गया है, लेकिन वे अभी भी पुरुषों के साथ समानता से बहुत दूर हैं। सैद्धांतिक रूप से प्राचीनकाल में महिलाओं की स्थिति उच्च थी, व्यावहारिक रूप से कितनी कम थी। आधुनिक भारतीय समाज में आज भी महिलाओं का शोषण और अपमान किया जाता है। ऐतिहासिक रूप 750 ई. तक की अवधि को प्राचीन काल के रूप एवं 1750 ई. के बाद के काल को आधुनिककाल के रूप में जाना जाता है। इस अवधि में महिलाओं की स्थिति में मौलिक परिवर्तन हुआ है और इसका अध्ययन निम्नलिखित दो चरणों में किया जा सकता है।

भारत में महिलाओं से जुड़े कुछ तथ्य

1. आंशिक संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था– भारत में जीवन के हर पहलू को लेकर एक समय से पुरुषों और महिलाओं के बीच पक्षपात रहा है। स्थिति के अनुसार, भारतीय समाज में श्रम का विभाजन है। महिलाओं के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति तैयार की गई है।

2. महिलाओं के बारे में सामाजिक बहिष्करण दृष्टिकोण – भारत में भारतीय महिलाओं के लिए माध्यमिक स्थान। महिलाओं के प्रति लापरवाही, परिहार और शोषण होता है अर्थात् सामाजिक दृष्टि से वे विकास की मुख्य धारा से भटक जाती हैं।
3. महिलाओं के लिए धर्म और संस्कृति का ढांचा– धर्म और संस्कृति समाज में महिलाओं की स्थिति को वर्गीकृत करने वाले आवश्यक घटक हैं।
4. मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव – भारतीय महिलाओं ने मनोवैज्ञानिक रूप से अपने क्षेत्र और स्थिति को स्वीकार किया। इसके अलावा वे अतिरिक्त गतिविधियों को करने की हिम्मत नहीं करते हैं।
5. महिलाओं में निरक्षरता– महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। इसलिए स्वाभाविक रूप से उनका आत्मविश्वास पुरुषों की तुलना में कमजोर होता है।
6. दूसरे पर निर्भरता–श्रम विभाजन में महिलाओं को गौण कार्य करना पड़ता है। आमतौर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला कठिन और महत्वपूर्ण कार्य। इसलिए आर्थिक रूप से महिलाएं दूसरों पर निर्भर रहती हैं।
7. वेशभूषा की परिधि परंपरा और बुरी आदतें– निरक्षरता और विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक रीति–रिवाजों, परंपराओं और अंधविश्वासों के कारण महिलाओं पर थौड़ा और प्रभाव पड़ता है।
8. महिलाओं द्वारा महिलाओं से अनभिज्ञता– कभी–कभी महिलाएं दूसरी महिलाओं से नफरत करती हैं और उनके लिए परेशानी खड़ी कर देती हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली भारत में इस दृष्टिकोण का प्रसिद्ध उदाहरण है।
9. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सोच का अभाव– कुछ महिलाएं समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से काफी दूर होती हैं। हमेशा की तरह उनके द्वारा सालों–साल काम किया जाता है।
10. एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को आगे ले जाना–महिलाओं की स्थिति और अधिकार समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं।

भारत में उपयुक्त महिला सशक्तिकरण के लिए मानदंड

भारत में महिला सशक्तिकरण की उचित गति को प्रभावी और बनाए रखने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जा रहा है। ये कारक महिला सशक्तिकरण की वास्तविक गति और वृद्धि को दर्शाते हैं।

1. महिलाओं की गतिशीलता और सामाजिक संपर्क में भागीदारी
2. कामकाज में बदलाव हैं और संगठन
3. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी।
4. विधायी और संवैधानिक पक्ष से समर्थन और एक्सपोजर
5. महिला सशक्तिकरण और वैश्वीकरण के बीच उपयुक्त समन्वय
6. कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए सुविधाजनक वातावरण का निर्माण।
7. महिलाओं के लिए सामाजिक और शैक्षिक सशक्तिकरण।
8. गैर सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की भूमिका
9. महिलाओं के समग्र विकास के लिए वित्त का प्रावधान।

खनेद्र रावत के अनुसार महिलाओं की सामाजिक असमानता अभी भी गंभीर स्थिति में है। अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में 178 देशों ने भाग लिया है लेकिन लगभग हर देश में स्थिति समान सी है। पितृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था के प्रभाव के कारण महिलाएं स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकती हैं। महिलाओं को तय करना है कि एक आंदोलन के लिए एकजुट हों। सभी देशों में अध्ययन के बाद महिलाओं की स्थिति समान सी है और उन्हें द्वितीयक स्थान पर रखा गया है। महिलाओं ने विशिष्ट स्थानों पर ध्यान नहीं दिया और प्रतिबंधित कर दिया है। भारतीय समाज में महिलाओं के लिए एक विशेष ट्रैक है जहां पुरुषों द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम होता है। वर्तमान मे घोटाले, बलात्कार, शोषण आदि भारत में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला कदाचार है। वास्तव में प्राचीन काल में वेदो मे महिलाएं देवी के रूप में मानी गई हैं लेकिन वर्तमान भारतीय समाज इसके विपरीत और अप्रासंगिक है। महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष अपेक्षित सम्मान और दर्जा नहीं मिलता है। श्री ब्लोरा के अनुसार, महिलाओं द्वारा किया गया स्पष्टीकरण गंभीर है और इसमें अपमान, कलंक और

आलोचना से भरा है। महिलाओं को अन्य महिलाओं के साथ उचित व्यवहार करना पड़ता है नफरत, संघर्ष और ईर्ष्या अन्य महिलाओं के चरित्र को खराब कर सकती है। इस वजह से महिलाएं खुद ही हीन भावना से ग्रस्त हो जाती हैं। जाति व्यवस्था, पदानुक्रम वर्ग प्रभाव और अनावश्यक रूढ़िवादिता को मिटाने की आवश्यकता है। हालाकि महिलाओं के अधिकारों के लिये भारत सरकार द्वारा महिला आयोग का गठन किया गया हैं। फ्रांसीसी दार्शनिक साइमन के अनुसार महिलाओं के विकास के लिए फ्रेम के अनुसार महिलाओं को ही पहल करनी पड़ती है। समाज मे महिलाओ को बच्चे पैदा करने की मशीन मानने की कुप्रवृति मानसिकदिवालियेपन को जाहिर करती हैं। महिलाओं के प्रति समाज की मानसिकता को बदलने के लिए सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

भारतीय महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न समस्याएं

1. महिलाओं के खिलाफ हिंसा

भारतीय महिलाओं का जीवन दुख और चिंता से भरा है। बलात्कार, छेड़छाड़, दहेज प्रताड़ना, पत्नी को पीटना, अपहरण, बच्चियों को वेश्यालय में बेचना, जबरदस्ती, छेड़छाड़ आदि विभिन्न प्रकार के अपराध हैं। भारतीय महिलाओं को इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

2. लिंग भेदभाव

जेंडर भेदभाव का अर्थ है ऐसी प्रथा जिसमें एक लिंग को दूसरे लिंग पर वरीयता दी जाती है। अधिक जनसंख्या के बाद भारत में दूसरी सबसे बड़ी समस्या कन्या भ्रूण हत्या और भेदभाव है। पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतर को सामाजिक महत्व देने की प्रथा हर जगह है। कुछ समाजों में ये अंतर बहुत अधिक होते हैं जबकि अन्य में उन्हें कम महत्व दिया जाता है।

3. लापरवाही और खराब स्वास्थ्य

दुनिया में भारतीय महिलाओं का सबसे ज्यादा शोषण होता है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से वह हमेशा दूसरे स्थान पर रही है। हीमोग्लोबिन की कमी, विभिन्न चिकित्सा समस्याएं, कुपोषण और उच्च मृत्यु दर भारतीय महिलाओं की इस प्रकार की विभिन्न स्वास्थ्य समस्याए भी हैं।

4. असमान लिंगानुपात

आम तौर पर किसी भी देश की जनसंख्या में पुरुष–महिला अनुपात कमोबेश एक समान रहता है। भारत में जैसा कि जनगणना रिपोर्टों से पता चलता है कि देश के सभी राज्यो मे लिंगानुपात मे असमानता रही हैं एवं केरल के अलावा सभी राज्यो मे महिलाओ का लिंगानुपात कम रहा है। यह समाज में गंभीर संकेतक है। इस समस्या का समाधान निकालने का प्रयास किया जाना चाहिए

5. स्त्री शिक्षा का आकर्षण न होना

प्राचीन काल से हमने देखा है कि आमतौर पर महिलाओं को शिक्षा से नजरअंदाज कर दिया जाता है। लड़की तो पराया धन होती है की धारणा की भारतीयों के बीच आम प्रवृत्ति है। तदनुसार, स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया गया है। महिला साक्षरता का शिक्षा का स्तर भी लगातार बढ़ रहा है। यह 1971 में 18.7% से बढ़कर 1991 में 39.42% और 2011 में 65% हो गया है। साक्षरता के प्रति रुझान में इस बदलाव के बावजूद महिला शिक्षा को आकर्षित बनाने की आवश्यकता है।

6. दहेज एक अभिशाप

विवाह समारोह के समय लड़की के माता–पिता द्वारा स्वैच्छा से दिया गया उपहार या राशि भारत में सामान्य प्रथा रही है। लेकिन वर्तमान मे वर पक्ष की मांग पर वधू पक्ष द्वारा दिये जाने वाले उपहार दहेज कहलाता है जो दिनोदिन बढ रहा हैं।यह दहेज नामक समस्या सभी समाजो मे गम्भीर समस्या बन गइ हैं। भारत में हर साल दहेज के कई मामले सामने आते हैं। यह भारतीय महिलाओं और उनके माता–पिता द्वारा सामना की जाने वाली एक बहुत ही गंभीर समस्या है।

7. महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा

भारतीय समाज में यौन शोषण, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज, घरेलू हिंसा आदि आम समस्याए देखी जा सकती हैं। ग्रामीण समाज में ऐसी समस्याओं की दर अधिक है। इसका मुख्य कारण पुराने रीति–रिवाजों और परंपराओं से मानसिकता को खराब करना है

8. यौन उत्पीड़न

आजकल महिलाओं के यौन उत्पीड़न से जुड़े कई मामले सामने आ रहे हैं। दिल्ली सामूहिक बलात्कार और भारत में होने वाली कई घटनाएं। बाल शोषण, यौन शोषण, मानव तस्करी, बाल श्रम आदि भारतीय समाज में मौजूद विभिन्न समस्याएं हैं।

9. कामकाजी महिलाओ की समस्याएं

कार्यस्थल पर महिलाओं को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्यस्थल पर कभी–कभी यौन उत्पीड़न और अन्य समस्याओ का महिलाओ को सामना करना पड़ता हैं। कामकाजी महिलाओ को कार्यस्थल पर कार्य की असमानता, कार्य की अधिकता के कारण देर रात तक कार्य के लिए रूकने को मजबूर करना इत्यादि समस्याओ का सामना करना पड़ता हैं।

भारत में महिलाओं की भूमिका

भारत मे महिलाओ की परिवार मे महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। जब महिला की परिवार मे अनेक भूमिका होती हैं तो ऐसी स्थिति उसे अपने परिवार की भलाई को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ते हैं तो वह परिवार मे ही शोषक लोगों के लिए बेहद कमजोर हो जाती है। इस पहलू के अलावा विकट परिस्थितियों में परिवार के लिए कमाने के लिए कहीं रोजगार लेने की संभावना के संदर्भ में, पर्याप्त कौशल की कमी ने उसे अनौपचारिक क्षेत्र के चंगुल में डाल दिया, जो भारत में गरीबी को और बढ़ाता है। अनौपचारिक क्षेत्र बड़े पैमाने पर अनियंत्रित होने के कारण, उसके जीवन की गुणवत्ता और आय का स्तर उसके नियोक्ता की सनक और पसंद के अनुसार बदलता रहता है। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां महिलाओं को तस्करों के जाल में काम का झांसा देकर उन्हें बेच दिया जाता है। गरीबी की जंजीरों में फंसी महिलाओं के लिए यौन शोषण और क्रूर काम की परिस्थितियां भी उतनी ही हकीकत हैं। यौन हिंसा और मानव तस्करी से लड़ने के लिए सरकार को भारत में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने और उन्हें औपचारिक क्षेत्र में शामिल होने में मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि वास्तविक रोजगार अनुबंधों के साथ आने वाली कानूनी सुरक्षा का आनंद उठाया जा सके। यद्यपि महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक लाभ के लिए कई संवैधानिक संशोधन किए गए है फिर भी वे स्थिति में आमूल–चूल परिवर्तन लाने के लिए अभी प्रभावी नहीं हुए। महिलाओ मे प्रति समाज मे एक दकियानूसी सोच रही हैं कि महिलाओं को केवल एक अच्छी पत्नी की भूमिका निभानी चाहिए, और अगर कोई महिला काम करने के लिए बाहर निकलती है, तो उसे एक बुरी महिला के रूप में देखा जाता है, जो सामाजिक मानदंडों के खिलाफ मानी जाती है। महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे पुरुषों के खाना खाने के बाद ही खाना खाएं, जो कुछ भी भोजन बचा है। इससे महिलाओं में बड़े पैमाने पर कुपोषण और स्वास्थ्य की स्थिति बेहद खराब हो गई। कुपोषण के कारण गर्भावस्था संबंधी समस्याओं के कारण हर दिन लगभग 500 महिलाओं की मृत्यु हो जाती है, और वयस्क होने से पहले उनकी शादी हो जाती है।यद्यपि देखभाल देने वाली सेवाएं महिलाओं को सशक्त बना सकती हैं यदि उन्हें पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया जाता है तो कैरियर के विकल्पों का दायरा अक्सर सामाजिक धारणाओं से

बाधित होता है कि एक महिला के लिए उपयुक्त क्या है और क्या नहीं। यही भारत में महिलाओं की भूमिका को परिभाषित करता है और समाज में उनका योगदान कितना सीमित होगा। दूसरी ओर लड़के के पास अपनी पसंद को बांधने वाली ऐसी कोई बेड़ियां नहीं हैं। भारत में महिलाओं ने धीरे–धीरे अपनी वास्तविक क्षमता को पहचानना शुरू कर दिया। उसने समाज द्वारा उसके लिए बनाए गए नियमों पर सवाल उठाना शुरू कर दिया है। नतीजतन, उसने बाधाओं को तोड़ना शुरू कर दिया और दुनिया में एक सम्मानजनक स्थान अर्जित किया। आज भारतीय महिलाओं ने सामाजिक कार्य से लेकर अंतरिक्ष स्टेशन जाने तक हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। ऐसा कोई अखाड़ा नहीं है, जिस पर भारतीय नारी विजय न पाती हो। चाहे वह राजनीति हो, खेल हो, मनोरंजन हो, साहित्य हो, तकनीक हो, हर जगह नारी शक्ति हो। सभी क्षेत्रो मे महिलाये अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभा रही हैं।

भारत में महिलाओं की बदलती भूमिका

स्वतंत्रता के बाद भारतीय महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। सांस्कृतिक और संरचनात्मक परिवर्तन महिलाओं के शोषण को काफी हद तक कम करते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को अवसरों की समानता प्रदान करते हैं। महिलाओं ने अपने घर के सुरक्षित क्षेत्र को छोड़ दिया है और अब जीवन के युद्ध के मैदान में हैं, अपनी प्रतिभा से पूरी तरह से बख़्तरबंद हैं। अब कोई ऐसा अखाड़ा नहीं है, जो भारतीय महिलाओं ने जीता न हो। महिला कार्यकर्ता भी कन्या भ्रूण हत्या, लिंग पूर्वाग्रह, महिला स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा और महिला साक्षरता जैसे मुद्दों पर एकजुट हुईं हैं। महिलाओं की भूमिका में जबरदस्त बदलाव आया है और वे समाज में सकारात्मक प्रभाव डालने में सफल रही हैं। गृहिणियों से लेकर सीईओ तक, संक्रमण को तेज गति से देखा जा सकता है। आधुनिकीकरण और नवीनतम तकनीक के आगमन ने उनके लिए आशा और अवसर बढ़ा दिए हैं। उन्होंने लगभग हर क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से खुद को स्थापित किया है। महिलाओं को अब सेना या अन्य रक्षा बलों के लिए अनुपयुक्त या कमजोर नहीं माना जाता है। हाल ही में अवनी चतुर्वेदी ने एक आदर्श उदाहरण स्थापित किया है और भारत की पहली महिला फाइटर पायलट बनकर एक मील का पत्थर बनाया है।

समाज में महिलाओं की भूमिका में सुधार

आधुनिक महिला इतनी चतुर और आत्मनिर्भर है कि उसे आसानी से एक सुपरवुमन कहा जा सकता है, जो अकेले ही कई मोर्चों पर काम करती है। महिलाएं अब बेहद महत्वाकांक्षी हो गई हैं और न केवल घरेलू मोर्चे पर बल्कि अपने–अपने पेशों में भी अपना लोहा मनवा रही हैं। भारत में महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। वे बड़ी संख्या में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं एवं शिक्षा देने का कार्य भी कर रही हैं। वे इंजीनियरिंग, चिकित्सा, राजनीति, शिक्षण आदि जैसे सभी प्रकार के व्यवसायों में प्रवेश कर रही हैं। एक राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वह अपनी महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार करता है। महिलाओं को उनका बकाया देने, और उनके साथ दुर्व्यवहार न करने, उन्हें कब्जे की वस्तु के रूप में देखने के बारे में धीमी और स्थिर जागरूकता है। प्रगति के बावजूद, तथ्य यह है कि महिलाओं से उपलब्धि हासिल करने के साथ–साथ पत्नियों या माताओं के रूप में अपनी भूमिकाओं को पूरा करने की अपेक्षा की जाती है और किसी भी चीज़ के खिलाफ घर को प्राथमिकता दी जाती है।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान महिलाओं की स्थिति

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, अंग्रेजों ने भारतीय लोगों पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। ब्रिटिश शासन के दौरान हमारे समाज के आर्थिक और सामाजिक ढांचे में बहुत सारे बदलाव किए गए। यद्यपि इस अवधि के दौरान महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता कमोबेश वही रही। पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानताओं को दूर करने में कुछ महत्वपूर्ण प्रयास भी हुए। सामाजिक बुराइयाँ जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा पुनर्विवाह का निषेध आदि जो महिलाओं की प्रगति के मार्ग में बड़ी बाधा थीं उसे राजा राम मोहन राय और विद्या सागर जैसे सुधारकों के प्रयासों से नियंत्रित करने के प्रयास किये गए या उपयुक्त कानूनों द्वारा हटाया गया। पंडिता रमाबाई जैसी कई महिला सुधारक भी महिलाओं की अक्षमताओं के लिए लड़ी। भीकाजी कामा, डॉ. एनी बेसेंट, विजयलक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ

अली, सुचेता कृपलानी आदि महिलाओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरोजिनी नायडू, एक कवि और स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला थीं और भारत में किसी राज्य की राज्यपाल बनने वाली पहली महिला थीं।

स्वतंत्र भारत में महिलाओं की स्थिति

स्वतंत्रता के बाद भारतीय महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। सांस्कृतिक और संरचनात्मक परिवर्तन महिलाओं के शोषण को काफी हद तक कम करते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को अवसरों की समानता प्रदान करते हैं। महिलाओं ने अपने घर के सुरक्षित क्षेत्र को छोड़ दिया है और अब जीवन के युद्ध के मैदान में हैं, अपनी प्रतिभा से पूरी तरह से बख़्तरबंद हैं। अब कोई ऐसा अखाड़ा नहीं है, जो भारतीय महिलाओं ने जीता न हो। कन्या भ्रूण हत्या, लिंग पूर्वाग्रह, महिला स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा और महिला साक्षरता जैसे मुद्दों पर महिला कार्यकर्ता भी एकजुट हुईं इस अवधि के दौरान हुए कुछ उल्लेखनीय सकारात्मक परिवर्तन इस प्रकार हैं।

- 1966 में श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की पहली महिला प्रधान मंत्री बनीं और उस पद पर कुल सोलह वर्षों तक कार्य किया और दुनिया की सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाली महिला प्रधान मंत्री बनीं।
- राजनीति के क्षेत्र में इंदिरा गांधी, जयललिता, मायावती, वसुंधरा राजे, उमा भारती, शीला दीक्षित, ममता बनर्जी आदि महिलाओं ने खुद को साबित किया और भारतीय महिलाओं को गौरवान्वित महसूस कराया.
- जब भारत में कोई महिला लेखिका नहीं थी, आज अरुंधति रॉय, अनीता देसाई, किरण देसाई, झुम्पा लाहिड़ी आदि ने लेखनकार्य मे नाम रोशन किये हैं।
- किरण बेदी, मदर टेरेसा, बछेंद्री पाल, किरण मजूमदार, कल्पना चावला, मीरा कुमार, प्रतिभा पाटिल आदि विभिन्न क्षेत्रों के ऐसे नाम हैं जो दूसरों के लिए मिसाल कायम करते हैं।
- आधुनिक भारत की महिलाएं उपलब्धि हासिल करने के साथ–साथ पत्नियों और माताओं के रूप में अपनी भूमिका उल्लेखनीय रूप से निभा रही हैं।
- महिलाएं अब नियमित रूप से उन कर्तव्यों का पालन कर रही हैं जो परंपरागत रूप से पुरुषों को सौंपे जाते हैं। आधुनिक महंगी संस्कृति में एक पुरुष की आय अब पर्याप्त नहीं है, इसलिए अर्थव्यवस्था में उतार–चढ़ाव ने एक महिला के लिए एक कैरियर प्राप्त करना आवश्यक बना दिया है, ताकि परिवार को आर्थिक रूप से समर्थन और बनाए रखने के लिए आवश्यक धन उपलब्ध कराया जा सके।
- भारत सरकार ने 2001 को महिला अधिकारिता का वर्ष घोषित किया। 2001 में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय नीति भी पारित की गई।
- आज भारत में आधुनिक महिलाएं इंजीनियरिंग, चिकित्सा, राजनीति, शिक्षण आदि जैसे सभी प्रकार के व्यवसायों में प्रवेश कर रही हैं। वे बड़ी संख्या में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में अध्ययन व अध्यापन का कार्य कर रही हैं। वास्तव में भारत में दुनिया में कामकाजी महिलाओं की सबसे बड़ी आबादी है और संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में अधिक संख्या में डॉक्टर, सर्जन, प्रोफेसर हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक महिला ने अपनी सामाजिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक जरूरतों की देखभाल करना शुरू कर दिया है। वह अब भारत में सामाजिक परिवर्तन के लिए सशक्त आधार स्तम्भ के रूप मे उभर रही है। यह कहा जा सकता है कि महिलाओं को पहले की तुलना में अधिक स्वतंत्रता है लेकिन कई मायनों में सच नहीं है क्योंकि समाज में अभी भी पूर्वाग्रह बना हुआ है। यद्यपि भारत में आज की आधुनिक महिलाओं की स्थिति उच्च है, भारत में महिलाओं की स्थिति की समग्र तस्वीर संतोषजनक नहीं है। अंत में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी राष्ट्र की प्रगति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि उसकी माताओं, पत्नियों, बहन और बेटियों की सक्रिय भागीदारी न हो, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सोच–समझकर अपने में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का निर्णय लेना चाहिए। महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण और महिलाओं को देश की प्रगति में समान भागीदार के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐसमोग्लू, डी., और रॉबिन्सन, जे.ए. (2013)। क्यों राष्ट्र विफलरू शक्ति, समृद्धि और गरीबी की उत्पत्ति। न्यूयॉर्करू क्राउन बिजनेस। गूगल शास्त्री
2. ऐसमोग्लू, डी., जॉनसन, एस., और रॉबिन्सन, जे.ए. (2014)। ष्फॉर्च्यून का उलटारू आधुनिक विश्व आय वितरण के निर्माण में भूगोल और संस्थान।ष द क्वार्टरली जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स 117(4), 1231–94-गूगल स्कॉलर
3- एडम्स, एम.के., सालाज़ार, ई।, और लुंडग्रेन, आर। (2013)। ष्उन्हें बताएं कि आप भविष्य के लिए योजना बना रहे हैं। उत्तरी युगांडा में किशोरों के बीच लिंग मानदंड और परिवार नियोजन। स्त्री रोग और प्रसूति के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल 123, 7–10-CrossRefGoogle fo}kuicesM
4. अल्बर्टस, एम (2015) निरंकुशता और पुनर्वितरण। कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। क्रॉस रेफगूगल स्कॉलर
5. नीरा देसाई, अमित कुमार गुप्ता में महिलाओं, नीतियों और कार्यक्रमों की बदलती स्थिति (सं।) महिला और समाज, विकास परिप्रेक्ष्य, क्विटेरियन पब्लिशर्स, नई दिल्ली 1986,
6. बार्टालोस, एम. के. (2016) बीमारी, पेशेवर देखभाल करने वाले और स्वयं सहायता करने वाले। स्वयं सहायता में अवधारणाएं और अनुप्रयोग, संस्करण। ।. H- काट्ज H- L- हेड्रिक, क. H- इसेनबर्ग, थॉम्पसन, गुडरिक, और कुचर। फिलाडेल्फियारू चार्ल्स प्रेस।
7. सुधारानी.के, माइक्रो क्रेडिट एंड एम्पावरमेंट, सोशल वेलफेयर, 49(1), पीपी.22–23
8. सिंह यूबी, सिंह हिम्मत एट अल, जुलाई–सितंबर (2020), हरियाणा के शिवालिक तलहटी में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका, इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक, खंड 56, पीपी.481
9. पुहाझेंडी.वी और जयरामन.बी, (1999), ग्रामीण गरीबों के बीच महिलाओं की भागीदारी और रोजगार सृजन में वृद्धि – अनौपचारिक समूहों के माध्यम से एक दृष्टिकोण। नेशनल बैंक समाचार समीक्षाएँ 15(4), पीपी.55 – 62
10. वाघमारे एट अल, (2012), महाराष्ट्र जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, 7(2), पीपी 231–235
11. रोहिला सुमन और भुवनेश्वरन स्वामी, (2007), महिला सशक्तिकरण सामाजिक आर्थिक विकास और प्रबंधन, जर्नल ऑफ ग्लोबल इकोनॉमी, वॉल्यूम। 3(1), पीपी. 73–75-
12. ललिता एन, (2013), माइक्रो फाइनेंस रूरल एनजीओ और बैंक नेटवर्किंग, सोशल वेलफेयर, 45.7, अक्टूबर, 13–17